Tender Heart High School, Sec-33-B, CHD

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी व्याकरण (लोकोक्ति पर आधारित कहानी)

पुस्तक - वीवा हिंदी व्याकरण-7

प्यारे बच्चो! सुप्रभात।

आज हम कक्षा सातवीं में लोकोक्ति पर आधारित कहानी पढ़ेंगे। ये कहानियाँ आपकी पुस्तक में नहीं हैं। अतः अध्यापिका द्वारा कराए गए कार्य को ध्यान से पढ़ेंगे। इन कराई गई लोकोक्तियों में से ही कोई एक लोकोक्ति पर आधारित कहानी लिखने को आएगी। यह कार्य आपको को भेजा जा रहा है। नीचे लिखी लोकोक्ति पर आधारित कहानियों को पढ़िए -

(क) 'का वर्षा जब कृषि सुखाने।
समय चूकि पुनि का पछताने॥'

इसका अर्थ यह है कि खेती सूख जाने के बाद वर्षा होने का कोई लाभ नहीं होता है, क्योंकि वर्षा का प्रयोजन खेती की समृद्धि होती है। खेती लहलहाने के समय यदि वर्षा नहीं होती है, तो खेती सूख जाती है और एक बार खेती के पूरी तरह सूख जाने के बाद चाहे कितनी भी वर्षा क्यों न हो जाए, खेती दोबारा हरी-भरी नहीं हो पाती है, क्योंकि फ़सल के फलने-फूलने का समय तब तक निकल चुका होता है और तब तक फ़सल मर चुकी होती है। अब इस पर आधारित कहानी देखिए -

कहानी :- बिहार के एक गाँव में एक गरीब किसान सपरिवार रहता था। परिवार के चार सदस्य थे, जो नेक और ईमानदार थे और बड़े प्यार से अपना जीवन बिता रहे थे।

एक दिन उस परिवार पर तुषारापात हुआ। परिवार का मुखिया किसान 'पीलिया' रोग से ग्रस्त हो गया। फ़सल तैयार होने का समय था इसलिए वह खेत पर चला गया और अपना काम करता रहा। तीसरे दिन उसकी हालत

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

DATE 16.12.24
PAGE No 2

कक्षा- सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय- हिंदी व्याकरण (लोकोक्ति पर आधारित कहानी)

बहुत बिगड़ गई। किसान की पत्नी उसे एक व्यक्ति के पास ले गई। उसने उसे झाड़-फूँक कर घर भेज दिया। तीन दिन तक किसान उस व्यक्ति के पास जाता रहा पर उसकी हालत न सुधरी। गाँव के मास्टर जी ने उन्हें पास ही के शहर के योग्य चिकित्सक को दिखाने की सलाह दी पर किसान न माना। उसकी हालत दिन-प्रतिदिन बिगड़ती चली गई। अब किसान का खाना-पीना सब छूट गया था। वह बिस्तर से उठ भी न पाता था, तभी किसान की पत्नी को किसी ने सूचित किया कि वैद्यजी गाँव में वापस आ गए हैं। किसान की पत्नी भागी-भागी गाँव के वैद्यजी के पास पहुँची। वैद्यजी ने आकर किसान की नब्ज़ देखी, साँस डूब रही थी। जब तक वैद्यजी ने दवा तैयार की, किसान के प्राण-पखेरू उड़ चुके थे। किसान ने संबंधियों से कहा- "वैद्य जी! जल्दी से दवा दीजिए।" तब वैद्यजी बोले- 'का वर्षा जब कृषि सुखाने।'

(ख) 'जाको राखे साइयाँ, मार सके न कोय

इसका अर्थ यह है कि जिस व्यक्ति की रक्षा स्वयं ईश्वर करना चाहता। चाहे सम्पूर्ण संसार ही उसका वैरी क्यों न बन जाए। उस व्यक्ति को मारना तो दूर, कोई उस व्यक्ति को थोड़ी-सी हानि भी नहीं पहुँचा सकता- 'बाल न बाँका कर सके, जो जग वैरी होय।'

इतिहास और हमारी पौराणिक कथाएँ इस कथन की साक्षी हैं कि ईश्वर के रक्षक बन जाने पर किसी के प्राण लेना मनुष्य के वश की बात नहीं है। प्रह्लाद को उसके पिता हिरण्यकश्यप ने कभी अग्नि में जलाकर, कभी पर्वत से गिराकर, कभी तलवार से कटवाकर मरवाने का प्रयास किया, परंतु मरना तो दूर प्रह्लाद का बाल भी बाँका न हुआ।

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

DATE 16.12.24
PAGE No. 3

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी व्याकरण (लोकोक्ति पर आधारित कहानी)

कहानी :- जयपुर में धनपतराय नाम का एक धनी व्यापारी परिवार सहित रहता था। उसके परिवार में वह और उसकी पत्नी जितने अच्छे थे, उसका बेटा आकाश उतना ही बिगड़ा हुआ था। वह पढ़ता-लिखता नहीं था। मौज-मस्ती में वह बहुत धन खर्च किया करता था। उसके मित्र उसे चोरी कर घर से पैसे मँगवाते थे। धीरे-धीरे यह बात व्यापारी और उसकी पत्नी को पता चल गई। अब वे पैसे सँभालकर रखते थे।

एक बार व्यापारी की पत्नी ने अपने आभूषण उतारकर डिब्बे में रखकर डिब्बा कर दिया और किसी कार्यवश रसोई में चली गई। इतना मौका आकाश के लिए बहुत था। उसे डिब्बे में से आधे आभूषण चुराते, घर के नौकर श्यामू ने देख लिया। आकाश ने श्यामू को धमकी दी कि यदि उसने यह बात किसी को बताई, तो वह उसे जान से मार देगा। श्यामू के मना करने पर कि वह यह बात किसी को नहीं बताएगा। इस पर आकाश को विश्वास नहीं हुआ और उसने स्कूटर की ब्रेक खराब कर श्यामू को बाज़ार से कुछ लाने को कहा। जैसे ही वह स्कूटर लेकर जाने लगा, मालिक ने उसे कोई और काम बता दिया। श्यामू बच गया

एक दिन श्यामू बीमार पड़ गया। मालिक ने दवा मँगवाकर उसके कमरे में रखवा दी। आकाश ने मौका पाकर उसकी दवा में ज़हर मिला दिया। सब बातों से अनजान श्यामू जैसे ही दवा उठाने लगा, कमज़ोरी के कारण शीशी हाथ से छूटकर टूट गई और वह फिर बच गया। एक दिन आकाश ने श्यामू को एकांत स्थान पर बुलाया और अपने दोस्तों से उसकी हत्या करवाना चाहता था। आकाश के दोस्त जैसे ही श्यामू का गला दबाने चले कि अचानक उन्हें पुलिस की जीप का सायरन सुनाई दिया। वे सब भाग गए श्यामू फिर बच गया।

(पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कक्षा- सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी व्याकरण (लोकोक्ति पर आधारित कहानी)

इतनी बार श्यामू की हत्या का प्रयास विफल हो जाने पर आकाश ने श्यामू की हत्या का विचार छोड़ दिया और उसके मुँह से निकल ही गया -

जाको राखे साइयाँ, मार सके न कोय।
बाल न बाँका कर सके, जो जग बैरी होय॥

(ग) 'जैसी करनी, वैसी भरनी' अर्थात् मनुष्य जिस तरह के कर्म करता है, वैसे ही उसे उसके परिणाम भोगने पड़ते हैं। अच्छे कर्म का परिणाम हमेशा अच्छा होता है और बुरे काम का परिणाम हमेशा बुरा। इसी आधार पर मुझे एक कहानी याद आ रही है -

मुंशीराम एक बड़ा उद्योगपति था। उसका अजमेर में दवाइयों का बहुत बड़ा कारखाना था। दिन-रात उसमें दवाइयाँ बनती थी। हज़ारों मज़दूर उसमें काम करते थे। मुंशीराम की बहुत तरक्की हो रही थी और अब उसके पास सारी सुख-सुविधाएँ थीं। धन के साथ-साथ मनुष्य की इच्छाएँ, लालच और भी बढ़ता जाता है। मालिक की इच्छा हुई कि उसके दोनों बेटों के लिए अलग-अलग कारखाने होने चाहिए। इस इच्छा के साथ उन्होंने बड़े शहर में दो बड़े भू-खंड (Plot) खरीद लिए और उन पर शीघ्र कारखाने बनाने का जुनून सवार हो गया, इसलिए उसने और आय बढ़ाने के विषय में सोचा। उनके एक दुष्ट मित्र ने उन्हें दवाओं में मिलावट करने की सलाह दी, जिससे लागत कम और लाभ अधिक हो। मालिक को यह बात जँच गई और पहली बार बड़े कमस्तर कम गड़बड़ी के साथ नकली दवाइयाँ बनाई गईं। जब कुछ दिन भयभीत रहने के बाद भी मुंशीराम को किसी अप्रिय घटना का समाचार न मिला, तो वह निडर हो गया।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

DATE 16.12.24
PAGE No. 5

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी व्याकरण (लोकोक्ति पर आधारित कहानी)

कुछ दिन बाद दवाइयों में भारी मिलावट की जाने लगी। व्यापक स्तर पर खुलेआम नकली दवाइयाँ बनने लगीं। जिस मित्र ने उन्हें यह सलाह दी थी, उसने ही अपना नाम गुप्त रखते हुए उनकी शिकायत कर दी और उधर तुरंत जाँच के आदेश आ गए। मुंशीराम ने अपनी इज़्ज़त बचाने के लिए भारी रकम देकर जाँच अधिकारी की मुट्ठी गर्म की और साफ़ बच गया।

अब तो मुंशीराम ने और अधिक मिलावट शुरू कर दी इससे उसकी आमदनी दिन-प्रतिदिन बढ़ती चली गई। उसने दोनों कारखाने अपने पुत्रों के सहयोग से बनवा दिए। एक दिन अचानक ही मुंशीराम के बड़े पुत्र की तबीयत बहुत खराब हो गई। उसे अस्पताल में भरती करवाया गया। आधी रात के समय जिस विशेष दवा की आवश्यकता थी, वह केवल एक ही औषधालय पर उपलब्ध होने से खरीद ली गई। पर यह क्या? इंजेक्शन के माध्यम से दवा अंदर जाने के कुछ ही क्षणों बाद उसका शरीर नीला पड़ने लगा। इससे पहले कि डॉक्टर समझकर उपचार करते, उसके बेटे ने दम तोड़ दिया।

अब नकली दवाइयों का सारा रहस्य खुल चुका था। मुंशीराम पुत्र की मृत्यु से इतना टूट चुका था कि उसने अपने बचाव के लिए कुछ नहीं किया और जेल में रहकर अपने पापों का प्रायश्चित करने लगा। उसे देखकर सभी ने यही कहा- 'जैसी करनी, वैसी भरनी।'

गृहकार्य:- सब बच्चे इन कराई गई कहानियों का अध्ययन करेंगे और कहानी लिखने का अभ्यास करेंगे। इनमें से ही कोई एक कहानी परीक्षा में करने को आएगी।

(अंतिम पृष्ठ-5)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner